एक विलक्षण फूलधारी परजीवी पौधा

डॉ. किशोर पंवार

सजीवों को विभिन्न समूहों में बांटने का एक प्रमुख आधार उनके पोषण का तरीका भी है। इस दृष्टि से सभी सजीवों को दो श्रेणियों में रखा गया है। पहले स्वपोषी और दूसरे परपोषी। स्वपोषी जीव सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में अपना भोजन स्वयं बनाते हैं। सारे हरे पौधे एवं कुछ बैक्टीरिया इसी श्रेणी में आते हैं। जो जीव अपना भोजन दूसरे जीवों से प्राप्त करते हैं वे परपोषी कहे जाते हैं। सारे जन्तु इसी श्रेणी में आते हैं। इनका भोजन या तो स्वपोषी पेड़-पौधे होते हैं या अन्य जंतु।

परपोषियों को भी परजीवी, सहजीवी और मृतजीवी में बांटा गया है। परजीवी यानी जो जीव पचा-पचाया भोजन किसी अन्य जीव से प्राप्त करे। सहजीवी का मतलब होता है दो जीवों का इस तरह साथ-साथ रहना कि वे एक-दूसरे को मदद पहुंचाएं और सामान्यतः इस मदद के बगैर उनका अस्तित्व संभव न हो। मृतजीवी यानी सड़े-गले मृत जैविक पदार्थों से अपना भोजन प्राप्त करने वाले पौधे। ये जंगल में सड़ी-गली पत्तियों व कार्बनिक पदार्थों के ढेरों पर उगते हैं और इनमें भोजन बनाने वाला हरा पदार्थ क्लोरोफिल नहीं होता।

मृतजीवी अपना भोजन मृत कार्बनिक पदार्थों से द्रव के रूप में ग्रहण करते हैं। इनमें ऐसे विशेष एन्ज़ाइम होते हैं जो इनके शरीर से बाहर आकर मृत पदार्थों पर क्रिया करके उन्हें द्रव में बदल देते हैं। फिर ये पचे हुए द्रव पदार्थ विशेष चूषक अंगों द्वारा सोख लिए जाते हैं। ब्रेड, अचार, मुरब्बों और चमड़ों पर लगने वाली फफूंद ही इस मायने में मृतजीवी है।

मगर *मोनोट्रोपा सराकोडेस* तथा *नियोटिया* और *इपीपोगान* जैसे कुछ आर्किड्स को भी उच्चतर माध्यमिक और स्नातक स्तर की अधिकांश पाठ्य पुस्तकों में मृतजीवी ही कहा गया है। ये फूलधारी पौधे हैं। थोड़ा गहराई में जाएं तो इनको मृतजीवी कहना उचित नहीं लगता। बल्कि इनका अध्ययन प्रकृति की खाद्य शृंखला के कुछ रोचक तथ्य उजागर करता है।

मोनोट्रोपा और *नियोटिया* के बारे में यह तो बहुत पहले से ही ज्ञात था कि इनकी जड़ों पर जड़-फफूंद (मायकोराइज़ा) का जाल बिछा रहता है। यह माना गया था कि ये इसी फफूंद-जाल के माध्यम से सड़ी-गली पत्तियों और मृत जन्तुओं से अपना भोजन प्राप्त करते हैं। *मोनोट्रोपा इंडिका* एक क्लोरोफिल रहित क्रीम रंग का पौधा है जो अधिकतर चीड़ (पाइन), ओक और फेगस जैसे पेड़ों की छाया तले सड़ी